आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12 अंक : 3 नवम्बर, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

कुलपति सन्देश

रोजगारोन्मुखी शिक्षा राष्ट्र की तरक्की के लिए आवश्यक: कुलपति

शिक्षा मानव समाज के विकास और प्रगति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जब से मानव सभ्यता का सूर्य उदय हुआ तभी से भारत अपनी शिक्षा और दर्शन के लिए प्रसिद्व रहा है। भारतीय संस्कृति ने सदैव विश्व का पथ प्रदर्शन किया है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान प्राप्ति है, शिक्षा न केवल ज्ञानार्जन का आधार है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय स्तर पर विकास का माध्यम भी है। जीवन में सफल होने तथा कुछ अलग पाने के लिए शिक्षा हर किसी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा जीवन की कठिन चुनौतियों को कम करने में मदद करती है। शिक्षा की महत्वता को देखते हुए लोगों को शिक्षा के अधिकार और शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए हर वर्ष 11 नवम्बर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया जाता है। यह दिन आजाद भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद को समर्पित है। भारत सरकार ने वर्ष 2008 में 11 नवम्बर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। देश के महान स्वतंत्रता सेनानी, विद्वान और प्रख्यात शिक्षाविद् की जयंती को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के दिन शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये कार्यो को याद किया जाता है। शिक्षा मंत्रालय ने मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के नेतृत्व में ही देश का पहला आई.आई.टी संस्थान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, स्कूल ऑफ प्लानिंग व आर्किटेक्चर, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् और सैकेण्डरी एज्यूकेशन कमिशन जैसे उच्च शिक्षा के संस्थानों की स्थापना भारत में की गई थी जो आज उच्च शिक्षा में मील के पत्थर साबित हो रहे हैं। मौलाना आजाद ने सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक खाई को पाटने के लिए तथा भारतीय संस्कृति व विरासत को समृद्ध करने के लिए ललित कला अकादमी, संगीत नाट्य अकादमी व साहित्य अकादमी जैसे राष्ट्रीय महत्व के संस्थान स्थापित किये। आज भारत की शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है जिसमें 1100 से अधिक विश्वविद्यालय सहित लगभग 56,000 से अधिक उच्च शैक्षणिक संस्थानों में लगभग 4.5 करोड़ छात्र अध्ययन कर रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर जोर दिया गया है तथा 2035 तक सकल नामांकन अनुपात को दोगुणा करने का लक्ष्य रखा है। विश्वविद्यालय को भी राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर विभिन्न इकाइयों के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर पशुचिकित्सा को बढ़ावा देना चाहिए जिससे अधिक से अधिक छात्र जुड़कर रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्राप्त कर सके।

आप सभी को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

आचार्य मनोज दीक्षित

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

पशुपालन मन्त्री श्री जोराराम कुमावत ने किया वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग रूम का लोकार्पण

माननीय पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग मंत्री (राजस्थान सरकार) जोराराम कुमावत ने 6 अक्टूबर को राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग रूम का उद्घाटन किया। माननीय मंत्री श्री जोराराम जी ने इस अवसर पर कुलपति एवं अधिकारियों के साथ विश्वविद्यालय की वर्तमान स्थिति, भविष्य की योजनाओं एवं विकास के संभावित क्षेत्रों पर गहन चर्चा की। शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार, अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा देने तथा छात्रों के समग्र विकास हेतु संबधित अधिकारियों को विस्तृत एवं आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किए। विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग रूम में स्थापित सिस्टम के माध्यम से राज्य सरकार द्वारा ली जाने वाली विभिन्न तरह की ऑनलाइन बैठकों में विश्वविद्यालय की भागीदारी सुनिश्चित की जा सकेगी एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा दिन प्रतिदिन ली जाने वाली बैठकों में विश्वविद्यालय के अधिकारी ऑनलाइन माध्यम से जुड़ सकेंगे और इससे विश्वविद्यालय के संसाधनों की बचत भी की जा सकेगी । इसके साथ ही इसमें विद्यार्थियों हेतु ए.आर–वी.आर सुविधा भी स्थापित की गई है। इसके माध्यम से छात्र यहां बैठे ही वर्चुअली देश की किसी भी प्रयोगशाला से जुड़ सकेंगे और वहां चल रहे अनुसंधान कार्यों को वर्चुअल देख व सुन सकेंगे जिससे देश ही नहीं बल्कि विदेश में भी स्थापित उन्नत तकनीक से अपने आप को वर्चुअली जोड़ पाएंगे एवं उसे समझ पाएंगे। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा इस तरह की सुविधा देश के 18 अग्रणी विश्वविद्यालय में उपलब्ध करवाई गई है जिसमें राजूवास भी शामिल है। इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग तथा ए. आर–वी.आर की सुविधा स्थापित करने के साथ ही विश्वविद्यालय प्रदेश में इकलौता विश्वविद्यालय बन गया है जिसमें विश्वविद्यालय की समस्त गतिविधियां इंटीग्रेटेड यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट सिस्टम के द्वारा ऑनलाइन रूप से संचालित की जा रही है। आई.यू.एम.एस. के प्रभारी डॉ. अशोक डांगी ने बताया कि इस सुविधा के माध्यम से छात्र एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी लाभान्वित होंगे।

पशुधन आधारित उद्यम परिदृश्य और सम्भावना पर वैज्ञानिक- उद्योग सम्पर्क बैठक आयोजित

ऊन, दूध, पशुआहार व अन्य उत्पादों की जांच हेतु हाईटैक लैब की आवश्यकता : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय और बीकानेर जिला उद्योग संघ के संयुक्त तत्वावधान में ''बीकानेर में पशुधन आधारित उद्यमः परिदृश्य और सम्भावनाएं'' पर परिचर्चा हेतु ''वैज्ञानिक–उद्योग सम्पर्क बैठक'' का आयोजन 10 अक्टूबर को कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में किया गया। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने समन्वित दृष्टिकोण को अपनाते हुए उद्यमियो, विश्वविद्यालयों एवं सरकार को नीति निर्धारण कर कार्य करने की बात कही। कुलपति आचार्य दीक्षित ने कहा कि सभी उद्योग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक दूसरे से जुडे होते है जिससे हम आने वाली समस्याओं को सम्मिलित प्रयासों से दूर कर सकते है। कुलपति ने कहा की पी.पी.पी. मोड़ पर ऊन, दूध, पशुआहार व अन्य उत्पादों की जांच हेतु हाईटैक लैब की स्थापना की आवश्यकता है ताकि उद्यमियों को इनकी जांच में लगने वाले खर्च व समय बच सके। विद्यार्थियो में उद्यमिता विकास हेतु इन्क्यूबेशन सेंटर विकसित करने तथा भविष्य के दृष्टिकोण को रखते हुए वर्चुअल प्रयोगशाला एवं रोबोटिक ऑपरेशन थियेटर विकसित करने का भी सुझाव दिया। बैठक में डी.पी. पचीसिया, अध्यक्ष जिला उद्योग संघ ने अपने विचार सांझा करते हुए कहा कि बीकानेरं से दुग्ध, ऊन, मोठ, मूंगफली, ग्वार, दालों आदि का बड़ा व्यापार होता है। लेकिन शहर में कोई मेगा फूड पार्क विकसित नहीं है ना ही मान्यता प्राप्त फुड़ टेस्टींग प्रयोगशाला है जिसके माध्यम से खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता निर्धारित हो सके। बीकानेर शहर में मेगा फूड पार्क एवं फूड टेस्टींग प्रयोगशाला स्थापित हो जाने से व्यापार जगत को गति मिलेगी। श्री अशोक मोदी, महाप्रबंधक लोट्स डेयरी, बीकानेर ने सदन में विचार रखते हुए कहा कि दुग्ध की मांग लगातार बढ़ रही है लेकिन मांग आपूर्ति के साथ–साथ गुणवत्ता निर्धारण बहुत आवश्यक है। अशोक मोदी ने शहर में उच्च मानक की दुग्ध टेस्टींग लेब स्थापित करने की जरूरत महसुस की ताकि दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों का निर्यात संभव हो सके। इसके अतिरिक्त उन्होने पशु चारा गुणवत्ता निर्धारण, चारागाह विकास एवं दुग्ध व्यवसाय के आधुनिकरण, कृत्रिम गर्भाधान हेतु सेक्स सोर्टड सीमन के उपयोग को बढावा देने एवं इस व्यवसाय के प्रोत्साहन हेतु सरकारी सहयोग की बात साझा की। ऊन इण्डस्ट्री से श्री कमल कल्ला और संजय राठी ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि बीकानेर एशिया की सबसे बड़ी ऊन मण्डी गिनी जाती है लेकिन भेड़ों की संख्या कम होने, चारागाह घटने एवं उत्तम ऊन टेस्टींग एवं संसाधनों की कमी से आज ऊन का आयात भी करना पड़ रहा है। जिला उद्योग संघ के वीरेन्द्र किराडू ने पशुपालकों को ऊन उत्पादन प्रशिक्षण हेतु ब्रीज कोर्स शुरू करने का सुझाव दिया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया की बैठक में डेयरी, भेड़, बकरी एवं मुर्गी पालन के बहुउपयोगी सेक्टर में क्षमता संवर्द्धन कर उद्यमिता विकास के कार्यो पर भी इस बैठक में विचार–विमर्श किया गया ताकि युवा एवं पशुपालक इस क्षेत्र में स्वरोजगार की ओर अग्रेषित हो सके।

महाकुम्भ-2025 के परिपेक्ष्य पर गोलमेज सम्मेलन

त्याग, तप, तर्पण, अर्चना, पूजा का सांस्कृतिक केन्द्र है भारत का महाकुम्भ

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में इण्डिया थिंक काउन्सिल की पहल पर दिनांक 3 नवम्बर को महाकुम्भ–2025 पर चर्चा हेतु गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी श्री विमर्शानन्दगिरी जी महाराज, अधिष्ठाता, लालेश्वर महादेव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संसार में मनुष्यता सबसे श्रेष्ठ है और मनुष्यता को उजागर करने का माध्यम कुम्भ है। विज्ञान के युग में बुद्धि, विचार व कर्म में परिवर्तन कुम्भ से ही संभव है। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति में सरलता है, भारतीयता है और अध्यातम है तभी कुम्भ में जाना सार्थक है। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि महाकुम्भ में 40 करोड़ लोगों की भागीदारी रहती है। महाकुम्भ का प्रबन्धन किसी व्यक्ति विशेष के बस की नहीं है बल्कि ईश्वरिय प्रबन्धन है। महाकुम्भ विश्वास व आस्था का केन्द्र है। कुलपति ने आह्वान किया कि खगोलिय, ज्योतिषिय, सांस्कृतिक और भौतिक दृष्टि से इस महाकुम्भ का आनन्द ले, क्योकि विज्ञान व विश्वास में कोई अन्तर भेद नहीं है। देखने, दर्शन, प्रतिभाग और भोगने की पूर्णता ही कुम्भ है और इसमे सहभागी बनने की जरूरत है। कार्यक्रम के दौरान प्रो. अरूण कुमार, कुलपति स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय ने कहा कि काशी विश्वनाथ, अयोध्या व महाकाल की तरह महाकुम्भ कॉरिडोर का भी निर्माण हो तथा इसके व्यापक रूप को गाँव–गाँव तक प्रचारित करने के लिए जनजागरण अभियान की जरूरत है। पुलिस महानिरीक्षक, बीकानेर ओम प्रकाश ने कहा कि महाकुम्भ सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना का उत्कर्ष है। इसके वैज्ञानिक दृष्टिकोण के महत्व को महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के युवा विद्यार्थियों को पहुचाने की आवश्यकता है ताकि वे भारतीय संस्कृति से जुड़ सके। इस अवसर पर प्रो. बी.एल. भादाणी, आचार्य राजेन्द्र जोशी, श्री विजय खत्री, श्री राजेन्द्र जोशी, श्री हरीश बी. शर्मा, डॉ. मेघना शर्मा, डॉ. दुलीचन्द मीणा, एवं श्री अशोक मेहता द्वारा महाकुम्भ की पौराणिकता, आध्यामिक महत्व, सांस्कृतिक प्रदर्शन, आर्थिक प्रभाव और राजनीतिक एवं सामाजिक गतिशीलता जैसे मुदों पर महत्वपूर्ण परिचर्चा की गई। श्री सौरभ पाण्डे, निदेशक इण्डिया थिंक काउन्सिल द्वारा महाकुम्भ–2025 पर प्रकाश एवं विषय प्रवर्तन किया गया। आयोजन सचिव प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की जन्म जयन्ती पर व्याख्यान कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षणिक महासंघ, राजस्थान (उच्च शिक्षा) के संयुक्त तत्वावधान में 9 अक्टूबर को लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर के त्रिशताब्दी जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति राजुवास आचार्य मनोज दीक्षित ने की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता योगेन्द्र, क्षेत्रिय सह सम्पर्क प्रमुख ने माता अहिल्या बाई की जीवनी का विस्तृत वर्णन करते हुए उनके जीवन के त्याग, संघर्ष, तप, आदर्शो के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होने बताया कि अहिल्या बाई एक कुशल प्रबंधक, राजनीतिज्ञ, समाज सेविका, समाज सुधारक एवं उच्च आदर्शो की मिशाल थी। उन्होने अपने समय काल में देश में विभिन्न मन्दिरों एवं तीर्थ स्थलो का निर्माण, जिर्णोधार करवाया। समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध करते हुए महिला स्वावलम्बन एवं आर्थिक उद्धार के कार्य किया। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने अपने व्याख्यान में कहा कि माता अहिल्या बाई ने बहुत ही सरल एवं सहज तरीके से जीवन के उतार–चढ़ाव का सामना करते हुए अपने कर्तव्यों का कुशलता पूर्वक निर्वाह किया। हमें उनके जीवन आदर्शो को अपनाते हुए कार्य करने चाहिए एवं देश हित में योगदान देना चाहिए। व्याख्यान माला में डॉ. दिग्विजय सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौर ने विषय प्रवर्तन किया। अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने धन्यवाद व्यक्त किया।

विश्व पशु दिवस का आयोजन

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर एवं भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पशु दिवस मनाया गया। विश्व पशु दिवस के आयोजन सचिव प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक क्लिनिक्स ने बताया कि कार्यक्रम में वेटरनरी कॉलेज के शिक्षकों, छात्रों, पशुपालन के अधिकारियों, जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के सदस्यों के साथ साथ गौशालाओं के प्रबंधकों व अन्य जीव जन्तु प्रेमियों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता श्री श्रेयांस बैद, मानद प्रतिनिधि भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 325, शेल्टर होम, एनिमल बर्थ कंट्रोल, स्ट्रे एनिमल, ऑक्सिटोक्सिन बैन, प्रदेश में ऊंटों का पलायन, बैलों के खेतों में उपयोग, पालतू जानवरों के टीकाकरण, पंजीकरण एंव जागरुकता अभियान व 1962 एनिमल एम्बुलेंस के बारे में जानकारी प्रदान की। अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने पशुओं के प्रति संवेदना जगाने हेतु प्रेरित किया तथा बताया कि पशुचिकित्सक होने के नाते हम सबकी जिम्मेवारी इस ओर अधिक है। डॉ. कुलदीप चौधरी ने मानव पशु रखरखाव के बारे में बताते हुए कहा कि इसका सीधा कारण मानव द्वारा पशुओं के प्राकृतिक आवास क्षेत्र में अतिक्रमण करना है। प्रो. राजेश कुमार धूडिया ने कहा कि पशुओं के विचरण क्षेत्र व गोचर भूमि पर किये जा रहे अतिक्रमण व सड़क आदि के निमार्ण की वजह से ही दुर्घटनाएं हो रही है। हमें पशुओं के प्रति संवेदनशील होना जरुरी है क्योंकि पशु भी पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस अवसर पर डॉ. आर.एस. पाल. डी. पी.एम.ई, उप निदेशक पशुपालन डॉ. राजेन्द्र स्वामी, डॉ. शशिकांत शर्मा, निरंजन सोनी भी उपस्थित रहे।

पशुचिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता और भविष्य की संभावनाएं विषय पर सेमीनार का आयोजन

वेटरनरी कॉलेज के अस्पताल को रेफरल के रूप में काम करना चाहिए : शासन सचिव डॉ समित शर्मा

शासन सचिवालय, राजस्थान सरकार, जयपुर के सभागार कक्ष में दिनांक 22 अक्टूबर को राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के संघटक एवं संबद्ध महाविद्यालयों, पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार के पदाधिकारियों, भारतीय पशुचिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष तथा सचिव, पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार के प्रतिनिधियों के मध्य ''गुणवत्तापूर्ण पशुचिकित्सा शिक्षा एवं भविष्य में सुधार'' विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन प्रारंभ में राजुवास, बीकानेर के विभिन्न संघटक एवं संबद्ध महाविद्यालयों के अधिष्ठाता द्वारा उनके महाविद्यालयों की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार की गतिविधियों पर डिजीटल प्रस्तुति दी गई। सम्मेलन में पशुचिकित्सा शिक्षा के आधुनिकीकरण, अनुसंधान में विश्वविद्यालय तथा पशुपालन विभाग का आपसी सामंजस्य तथा पशुचिकित्सा का पशुपालकों को अधिकाधिक लाभ किस प्रकार दिया जा सकता है, विषय पर विस्तृत चर्चा की गई जिसमें प्रशासन, राजस्थान सरकार, पशुपालन विभाग, भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् तथा विश्वविद्यालय द्वारा आपसी समन्वय एवं सहयोग स्थापित करने की प्रतिबद्धता दी गई। सेमिनार में संभागियों को संबोधित करते हुए शासन सचिव पशुपालन, गोपालन एवं डेयरी डॉ. समित शर्मा ने कहा कि सभी वेटरिनरी कॉलेज को उत्कृष्टता का केंद्र बनाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। पशुचिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में हम काफी काम कर रहे हैं परंतु अभी भी सुधार की संभावनाएं बहुत अधिक हैं। हमें अपने पशुचिकित्सा शिक्षा के संस्थान देश में अव्वल स्थान पर लाने के लिए प्रयास करने होंगे। ग्रेडिंग के पहले दस स्थानों में राजस्थान के पशुचिकित्सा शिक्षा संस्थान आएं इसके लिए आवश्यक है कि हमारे पास जो संसाधन उपलब्ध हैं हम उनका अधिक से अधिक और बेहतर उपयोग करें। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि सभी कॉलेज अपने विद्यार्थियों को सम्मानपूर्वक डिग्री देने के लिए समारोह का आयोजन करें, विद्यार्थियों के सभी दस्तावेज डिजी लॉकर में रखें, सप्ताह के अंत में पढ़ाए गए विषयों का मूल्यांकन करें, पढ़ाए जाने वाले विषयों की जानकारी विद्यार्थियों को पूर्व में दें, कॉलेज में इनडोर ऑपरेशन करने का प्रयास करें। इन सब प्रयासों से ही आने वाले वर्षों में पशुचिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता लाकर हम राज्य के पशुचिकित्सा शिक्षा संस्थानों को देश में सर्वोच्च स्थान पर ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें मिशन मोड के साथ इस प्रयास के लिए जुटना होगा। हमें अब संख्या की बजाय गुणवत्ता पर फोकस करना होगा तभी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। इस अवसर पर भारतीय पशुचिकित्सा परिषद के अध्यक्ष डॉ उमेश चंद्र शर्मा ने कहा कि हमारा काम केवल पशु चिकित्सक तैयार करना नहीं है बल्कि उनके अंदर संवेदनशीलता विकसित करना भी हमारा उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता के लिए पर्याप्त संख्या में शिक्षक होना भी बहुत आवश्यक है। मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण तीनों का समन्वय करते हुए वन हेल्थ मिशन चलाया जाए। सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए राजुवास के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि अपनी कमियों को स्वीकार करने से हमें गुरेज नहीं करना चाहिए बल्कि उन कमियों को दूर करने का प्रयास करते हुए हमें ऊंचाई की तरफ बढ़ना चाहिए, अच्छे और बुरे दोनों स्थितियों में हमें काम करना होगा। समस्याएं भी आएंगी पर उन सबका सामना हम मिलकर करेंगे और निश्चित रूप से हम प्रदेश को देश में सर्वोच्च स्थान दिलाने में कामयाब होंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए क्षेत्र में काम कर रहे पशुचिकित्सा अधिकारियों और शिक्षा संस्थानों के बीच अच्छा तालमेल होना भी आवश्यक है। इस अवसर पर निदेशक पशुपालन डॉ. भवानी सिंह राठौड़ ने कहा कि शिक्षा के साथ साथ नवाचारों को भी स्थान देना होगा। संकायाध्यक्ष प्रो. हेमन्त दाधिच ने प्रजेन्टेशन के माध्यम से विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सहायक शासन सचिव, पशुपालन विभाग, सचिवालय, पशुपालन विभाग तथा राजुवास, बीकानेर के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

1962 पर कॉल करते ही घर पर मिलेगी पशुचिकित्सा सेवा

राज्य सरकार द्वारा पशुधन और पशुपालकों की समस्याओं के समाधान हेतु मोबाइल पशुचिकित्सा सेवा के लिए 9 अक्टूबर से कॉल सेंटर शुरू किया गया। आगरा रोड स्थित राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान में माननीय पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत और माननीय पशुपालन राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म इस कॉल सेंटर का लोकार्पण किया। प्रदेश में प्रत्येक एक लाख पशुओं पर एक मोबाइल वेटरनरी यूनिट काम करेगी। भारत सरकार की केन्द्र प्रवर्तित योजना के तहत प्रदेश में 536 मोबाइल वेटरनरी यूनिट से पशुपालकों को उनके घर पर पशुचिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई जायेगी। वर्तमान में ये यूनिट अपने तय रूट पर शिविर लगाकर पशुपालकों को सेवाएं दे रही हैं। कॉल सेंटर शुरू होने से पशुपालकों को उनके दरवाजे पर ही पशुचिकित्सा सेवा मिल सकेगी। इस कॉल सेंटर का हेल्प लाइन नंबर 1962 है, जिस पर फोन कर पशुपालक इन सेवाओं का लाभ ले सकते हैं।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 14, 18 अक्टूबर को गांव मानकासर, राजियासर एवं गुरूसर मोडिया गांवों में तथा 9 एवं 16 अक्टूबर को केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 111 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7, 8, 10, 15 एवं 16 अक्टूबर को गांव सोनगांव, कुचावटी, साहरई, बदनगढ और घडी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 101 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8 एवं 10 अक्टूबर को गांव फिरोजपुर एवं घड़ी चाटोला गांवों में तथा 23 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 95 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 9 एवं 17 अक्टूबर को गांव डीगार, वेरापुर एवं घान्ता गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 5, 7, 9, 14, 16, 18 एवं 21 अक्टूबर को सिंगनोर, जाझड़, बासावा, बिरोल, बॉय, कोलसिया एवं गुडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 122 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 8, 10, 14, 19, 21 एवं 24 अक्टूबर को गांव कानड़वास, बिकमसरा, साजनसर, तारानगर, चंगोई एवं डोकवा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 158 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 10, 15 एवं 17 अक्टूबर को गांव चोसला, ऊडिट एवं कथौटी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 68 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 7, 9 एवं 16 अक्टूबर को गांव फुलदेसर, नाथुसर एवं उदेशिया गांवों में तथा 10 अक्टूबर को केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 15 एवं 18 अक्टूबर को गांव कठमाणा एवं चांवडिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 43 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 14 एवं 22 अक्टूबर को गांव रामसरा एवं फेफाना तथा 7–8 एवं 16–17 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 120 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

शुष्क काल में दुधारू पशुओं का प्रबंधन

वर्तमान समय में डेयरी पालन ग्रामीण पशुपालकों के लिए आय एवं विकास का उत्तम साधन बन चुका है। गर्भकाल, शुष्क काल और बच्चे के जन्म के समय पर किया गया प्रबंधन अधिकतम दुग्ध उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

शुष्क काल क्या है :

शुष्क काल दुधारू पशुओं के दुग्ध काल चक्र की वह अवधि है जिसमें गर्भवती गाय/भैंस ब्याने से 45–60 दिन पूर्व स्वयं दूध देना बंद कर दे या पशुपालक स्वेच्छा से दुहाई छोड़ दे और धीरे–धीरे थनों से दूध सूख जाता है। यह पशु के लिए आराम की स्थिति है जिसमें वह अगले दुग्ध काल एवं बच्चे के जन्म की तैयारी करता है।

क्यों महत्वपूर्ण है शुष्क काल :

- ❖ पशु की शारीरिक स्थिति और दुग्ध उत्पादन के लिए बहुत जरूरी है।
- ❖ इस दौरान पशुओं में पोषक तत्वों को पुर्नस्थापित तथा दुग्ध उत्पादन हेतु दूध स्रावित करने वाले उत्तकों को पुर्नर्जीवित कर अगले लेक्टेशन की तैयारी करने का कार्य होता है।
- ❖ चयापचय, पाचन और संक्रामक रोग का न्यूनीकरण होता है।
- ❖ गर्भ में विकसित होने वाले बछड़े को उचित विकास एवं पोषण मिलता है।

शुष्क काल में प्रबंधन : पशुओं को शुष्क काल में उचित प्रबंध नहीं मिलने की स्थिति में दुग्ध उत्पादन 25 से 30 प्रतिशत कम हो जाता है और पशु के स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है।

सुखाने की प्रक्रिया : शुष्क काल के दौरान दूध उत्पादित करने वाली कोशिकाओं के विकास, एंटीबॉडी का संचय आदि जटिल प्रक्रिया स्तन ग्रंथी में होती है

पशु को शुष्क करने की विभिन्न विधियां :

- ❖ दोहन निकालना पूर्णतया बंद करके–यह विधि कम दूध उत्पादन करने वाले पशुओं के लिए उपयुक्त है।
- ❖ अपूर्ण दोहन विधि द्वारा – अधिक मात्रा में दूध उत्पादन करने वाले पशुओं के लिए यह विधि उपयोग में ली जाती है, जिसमें पशुओं को सूखाने के 3–4 सप्ताह पूर्व से दान मिश्रण कम प्रदान करना चाहिए।
- ❖ कभी–कभार दोहन विधि– थनैला से ग्रसित पशुओं के लिए इस विधि का उपयोग किया जाता है जिसमें दो से तीन दिनों के अंतराल पर दूध निकालने के बाद थनों के छिद्र में एंटीबायोटिक दवाई दी जाती है।

आहार प्रबंधन : शुष्क काल के दौरान पशु को कम प्रोटीन और अधिक ऊर्जा प्रदान करने वाला भोजन प्रदान करना चाहिए। बछड़े के आकार में वृद्धि और रूमन के आकार में कमी के कारण शुष्क काल के अंतिम भाग में पशु शुष्क पदार्थों का सेवन कम कर देता है, इसलिए प्रारंभ में चारा एवं दाना समुचित मात्रा में खिलाए तथा अंतिम दो सप्ताह में दाने की मात्रा बढ़ा दे। पशु को इस दौरान लवण मिश्रण एवं विटामिन ए, डी और ई युक्त संतुलित आहार देना चाहिए जिससे मां एवं बच्चे की संपूर्ण आवश्यकता को पूरी की जा सके और मिल्क फीवर, कीटॉसिस आदि चयापचय रोग के खतरे को भी कम किया जा सके।

आवास प्रबंधन : पशु के लिए साफ, सुखा, प्राकृतिक हवा और प्रकाश युक्त आवास की व्यवस्था करनी चाहिए जहां स्वच्छ पानी और छांयादार स्थान उपलब्ध हो। पशु के ब्याने के 24 से 48 घंटे पूर्व जमीन पर पुआल बिछा दें और रोगी पशु से दूर रखे।

स्वास्थ्य प्रबंधन : पशु को नियमित व्यायाम करवाना चाहिए साथ ही आंतरिक एवं बाह्य परजीवियों से बचाव और समयबद्ध टीकाकरण करवाना चाहिए। जिन पशुओं में थनैला रोग की आशंका अधिक होती है या सामान्य स्थिति में भी पशुओं के थनों में शुष्क काल के दौरान एंटीबायोटिक दवाई दी जाती है जिससे कि रोगकारक जीवाणु प्रवेश नहीं कर सके।

डॉ. प्रेरणा यादव
सहायक आचार्य, पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

गाय व भैंसों में बबेसियोसिस रोग के लक्षण, कारण और उपचार व बचाव

बेबेसिआ एक छोटा सा परजीवी है जो लाल रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करता है। इस परजीवी से होने वाले संक्रमण को बबेसिओसिस रोग कहा जाता है। आमतौर पर यह टिक के काटने से फैलता है। बबेसिओसिस रोग अक्सर लाइम रोग के साथ प्रभावित करता है। जब संक्रमित डियर टिक काटते है तो यह रक्त में प्रवेश कर जाते हैं।

बबेसिओसिस रोग के लक्षणः

बबेसिओसिस रोग द्वारा प्रभावित होने के एक से आठ सप्ताह के बाद इस बीमारी के लक्षण दिखने शुरू हो जाते है, हालांकि कई मामलों में लक्षण दिखाई नहीं देते है। इसके सामान्य लक्षणों में शामिल हैः बदन दर्द, ठंड लगना, थकान, बुखार, सिरदर्द, भूख में कमी, पसीना आना। इस संक्रमण की वजह से हेमोलिटिक एनीमिया की चपेट में आ सकते है, जिसमें शरीर में लाल रक्त कोशिकाएं जितनी तेजी से बनती है उससे ज्यादा तेजी से खत्म होने लगती है। इसके लक्षणों में शामिल है, उलझन गहरे रंग का पेशाब, चक्कर आना, अनियमित दिल की धड़कन, प्लीहा और लीवर की सूजन, रूखी त्वचा, दुर्बलता त्वचा, आंखे और मुंह का पीला (पीलिया)।

बबेसिओसिस रोग का कारणः

यह एक छोटे परजीवी के कारण होने वाला संक्रमण है, जिसका नाम बेबेसिआ है। बेबेसिआ को न्यूटालिया के नाम से भी जाना जाता है। यह परजीवी संक्रमित व्यक्ति या पशुओं की लाल रक्त कोशिकाओं के अंदर बढ़ते और प्रजनन करते हैं। लाल रक्त कोशिकाओं के प्रभावित होने पर अक्सर यह कोशिकाएं टूट जाती है, जिसके कारण तेज दर्द होता है। मनुष्यों को संक्रमित करने के साथ यह पशुओं को भी संक्रमित करते है जैसे–घोड़ा, भेड़–बकरी, श्वान, सूअर।

बर्बेसिओसिस रोग का उपचार व बचावः

यदि किसी पशु में लक्षण नहीं दिखाई देते है तो उसे इलाज की आवश्यकता नही है। जिन लोगों में लक्षण दिखाई देते है उन्हें डॉक्टर एटोवाकोन (संक्रमण की दवा) लेने की सलाह दे सकते है। यह दवा एंटीबायोटिक एजिथ्रोमाइसिन के साथ मिलकर सूक्ष्मजीवों को मारने में मदद करती है। इसके अलावा डॉक्टर एंटीबायोटिक क्लिंडामाइसिन के साथ कुनैन (मलेरिया और बबेसिओसिस रोग की इलाज की दवा) लेने की भी सलाह दे सकते हैं।

इस संक्रमण को रोकने के कुछ उपाय निम्न हैः

- अधिक घास वाली जगह से पत्तियों के ढेर जैसे स्थान से दूर रहें क्योंकि इन जगहों पर टिक के होने की संभावना ज्यादा रहती है।
- टिक संभावित क्षेत्र में हमेशा ऐसे कपड़े पहने जो शरीर को ढक कर रख सके तथा हल्के रंग के कपड़े पहने, ताकि टिक्स को आसानी से पहचान कर उन्हें हटाया जा सके।
- यदि कपड़ों या शरीर पर टिक मिलते है तो किसी नुकीली चिमटी के जरिए इसे निकालने की कोशिश करें।

जिन लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर है उनके लिए जोखिम अधिक रहता है, ऐसे पशुओं में बबेसिओसिस रोग जानलेवा हो सकता है। बड़े वयस्क, विशेष रूप से ऐसे लोग जो अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित है उनके लिए भी खतरनाक हो सकता है। इसलिए लक्षणों को देखने के बाद तुंरत चिकित्सक की सलाह पर उपचार लेवें।

डॉ. ताराचंद नायक
प्रभारी अधिकारी, पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

खुरपका-मुंहपका रोग से पशुपालकों को आर्थिक नुकसान

खुरपका–मुंहपका पशुओं को होने वाला एक संक्रामक रोग है। यह एक विषाणु जनित रोग है, जो पशुओं के बीच बहुत तेजी से फैलता है। विभिन्न प्रकार के पशुओं जैसे गाय, भैंस, बकरी, भेड़ आदि में यह रोग देखने को मिलता हैं। व्यस्क पशुओं में यह रोग तेजी से फैलता है इससे पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है, परन्तु छोटे पशुओं में यह रोग घातक भी हो सकता है और पशु अगर ठीक हो भी जाते है तो वे काफी कमजोर एवं दुर्बल हो जाते है। यह विषाणु पिकोरना विरिडी परिवार का एफथो वायरस है, जिसके विभिन्न देशों में सात स्ट्रेन है। एफ.एफ.डी संक्रमित पशु से दूसरे पशु के सम्पर्क से, श्वांस से तथा विभिन्न स्त्रावों के माध्यम से यह रोग फैलता है। इसके अलावा दूषित (संक्रमित) बाड़े, घास, पानी तथा संक्रमित पशु परिवहन वाहन से भी यह रोग पशुओं में फैल सकता है। संक्रमित हवा के प्रवाह से भी यह रोग एक दूसरे पशु में आ जाता है।

लक्षणों की गंभीरता वायरस का प्रकार, रोग की गंभीरता तथा पशु की स्वंय की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करती है। वयस्क पशुओं में मृत्यु दर कम होती है, परन्तु युवा पशुओं में मृत्यु दर अधिक होती है।

लक्षणः

- लक्षणों में मुख्यतः मुंह मे छाले हो जाते हैं, जिससे पशु कुछ भी खाना–पीना बंद कर देता है तथा मुंह से हर समय जाग गिरने लगते है।
- पशु का दूध उत्पादन एकदम कम हो जाता है।
- मुंह के छाले फटने पर विभिन्न जीवाणु संक्रमण का भी खतरा रहता है।
- अन्य लक्षण बुखार, वजन में कमी, दूध उत्पादन में कमी इत्यादि है।
- पशु के खुरों में भी छाले हो जाते है जिससे कि उसे चलने–फिरने में भी कठिनाई होने लगती है।

रोग से उपचार व बचावः

- यह विषाणु जनित रोग है अतः इसके उपचार की बजाय बचाव में ही ज्यादा फायदा है। उपचार केवल लक्षणों के आधार पर किया जाता है। मुंह के छालों के लिए पशुचिकित्सक की सलाह पर पोटेशियम परमेग्नेट के पानी से धोने की सलाह दी जाती हैं तथा खुरों पर भी पोटेशियम परमेग्नेट के घोल से धोने पर घावों में आराम रहता है। पशु को बुखार आने पर पेरासिटामोल का टीका इत्यादि लगाकर लक्षणों आधारित उपचार किया जाना चाहिए।
- एफ.एम.डी के बचाव हेतु वर्ष में दो बार पशुओं को टीकाकरण किया जाना चाहिए।
- नये पशु खरीदने पर उन्हें पहले 15 दिन के लिए अलग रखना चाहिए फिर झुंड में शामिल करना चाहिए।
- पशु बाड़ों की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु बाड़े में वाहनों को, बाहरी व्यक्तियों का प्रवेश निषेध होना चाहिए।
- समय–समय पर पशुओं की जांच होनी चाहिए। लक्षण दिखने पर तुंरत उस पशु को अलग कर देना चाहिए।
- संक्रमित पशु के स्त्राव व गोबर इत्यादि का उचित निपटान होना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

बकरी पालन : आजीविका के साथ-साथ आर्थिक समृद्धि की राह

ग्रामीण क्षेत्रो मे कृषि एंव पशुपालन आय के मुख्य स्त्रोत के रूप मे अपनाए जाने वाले व्यवसाय है। गो–भैंस पालन मे पशुओ का पोषण एंव प्रबंधन मे लागत अधिक रहती है। बकरी पालन व्यवसाय को सीमांत, लघु किसान एवं भूमिहीन वर्ग कम लागत, साधारण आवास एवं रखरखाव तथा सीमित पालन पोषण के साथ आसानी से कर सकते हैं। इसलिए इनका रूझान बकरी पालन की ओर अधिक होने लगा है। बकरी पालन जीविकोपार्जन के साथ–साथ हर क्षण आर्थिक उपलब्धता को भी सुनिश्चित करता है इसीलिए बकरी को गरीब की गाय भी कहा गया है। बकरी पालन से जुड़े राकेश पुत्र श्री कंटू केवट उम्र 35 वर्ष, शिक्षा– प्राथमिक स्तर, ग्राम–रंगपुर, तह. लाड़पुरा, जिला–कोटा ने बकरी पालन को आय का मुख्य स्त्रोत बना रखा है। राकेश ने अपनी मेहनत और परिश्रम के कारण कृषि भूमि ना होते हुए भी आज बकरी पालन से अपने परिवार की आजीविका के साथ–साथ आर्थिक रूप से भी सुदृढ हुए है। इनका कहना है कि बकरी पालन मे कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इन्होने बकरी पालन मात्र 10 बकरियों से शुरू किया था। वर्तमान मे इनके पास 70 बकरियां है। ये मुख्य रूप से सिरोही व मारवाड़ी नस्ल की बकरियों का पालन करते है। ये बकरियों को पोषण घर पर एंव चराई भी कराते है। चरागाहों से पत्तियों, घास, झाड़ियों आदि के सेवन से उत्तम दूध एवं मांस का उत्पादन करते है। राकेश बकरियो मे नियमित समय पर कृमिनाशक दवाओं का उपयोग करते है एंव फड़किया, खुरपका–मुंहपका एंव पीपीआर रोग से बचाव हेतु समय–समय पर टीकाकरण भी करवाते है। ये बकरियों को संतुलित पशु आहार, खनिज लवण मिश्रण व नमक भी आहार मे देते है। बकरी पालन मे अच्छा अनुभव होने के कारण गांव के अन्य बकरी पालक भी इनसे सलाह लेते रहते है। भविष्य में ये स्वंय इस व्यवसाय को वृहद स्तर पर व्यवस्थित तरीके से करने की इच्छा रखते हैं। राकेश बकरी पालन संबंधित समस्याओं के लिए नियमित रूप से पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा के सम्पर्क मे रहते है। वे अपनी सफलता का पुरा श्रेय अपने परिवार के सदस्यो एंव पशु विज्ञान केन्द्र–कोटा को देते है।

सम्पर्क-राकेश
गांव-रंगपुर, तहसील लाडपुरा, जिला कोटा (मो. 8890712266)

निदेशक की कलम से...

पोल्ट्री फार्मिंग में नवीन तकनीकों का समावेश करें मुर्गीपालक

भारत में मुर्गीपालन एक तेजी से बढ़ता हुआ उद्योग है, जो न केवल देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि लाखों लोगों के लिए रोजगार व आय के साधन भी प्रदान कर रहा है साथ ही गरीबी उन्मूलन और आर्थिक विकास में भी योगदान देता है। हाल ही कुछ वर्षो में मुर्गीपालन के क्षेत्र में नवीन तकनीकों और उन्नत संसाधनों ने इस व्यवसाय को समृद्ध व सशक्त बनाया है। मुर्गीपालन व्यवसाय में आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस और मशीन लर्निंग का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। ये तकनीके मुर्गीपालकों को मूर्गियों के व्यवहार, स्वास्थ्य और उत्पादन से सम्बन्धित आंकड़ो को एकत्रित करने तथा उनका विश्लेषण करने में मदद करती है। इसी प्रकार जैव सुरक्षा तकनीकों का उपयोग मुर्गीपालन में रोगों में नियंत्रण करने में मदद करती है। मुर्गीफार्मो की स्वच्छता, पक्षियों की बीच की दूरी तथा फार्म में बाहर से आने–जाने वालों पर नियंत्रण रखकर रोगों को नियंत्रित किया जा सकता है। इन्टरनेट आधारित स्मार्ट फार्मिंग से फार्म पर विभिन्न पहलूओं जैसे तापमान, आर्द्रता, प्रकाश व्यवस्था और वेंटीलेशन आदि का नियंत्रण सेंसर का उपयोग करके किया जा सकता है। ये सेंसर वातावरण में होने वाले बदलावों के अनुसार स्वचालित रूप से संशोधन कर सकते है। विभिन्न मुर्गीपालन फार्मो पर जेनेटिक चयन तथा प्रजनन तकनीकों का उपयोग भी किया जा रहा है। इन तकनीकों का उपयोग कर उन पक्षियों का चयन किया जाता है जो तेजी से वृद्वि करते है तथा कम आहार का उपयोग करके अधिक अंडे या मांस का उत्पादन कर सकते हैं तथा रोगों में प्रतिरोधक क्षमता रखते है। खाद्य व पोषण तकनीकों के माध्यम से भी मुर्गीपालक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आहार में विशेष पोषक तत्वों और सप्लीमेंट्स को शामिल कर मुर्गियों के विकास, अंडे उत्पादन और मांस की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। कुछ मुर्गीपालक भाई अपने फार्मो पर ऊर्जा की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए सौर ऊर्जा का भी उपयोग कर रहें है। सौर पैनलों के माध्यम से बिजली उत्पादन कर ऊर्जा की लागत को कम कर रहें है, बल्कि पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। इसके अलावा बाजार और आपूर्ति श्रृंखला में डिजिटल प्लेटफार्मो का उपयोग कर, जैविक फार्मिंग कर तथा अन्य नवाचार कर मुर्गीपालक अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इन नवाचारों से न केवल मुर्गीपालक लाभान्वित हो रहे हैं बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया